CONTACT ADDRESSES

VASANTBHAI U. PATEL
Days Inn,206,South Illionise Ave,
Oak Ridge,
TN-38730, U.S.A.
Ph : 865-483-5615(T.F)

RAM S. GWALANI
LAGOS NIGERIA,
Ph : (R) 2610661, 2612726
(O) 4971922, 4971944 Fax : 2618848

MANUBHAI SAVLA
P.B, No. 18219 NAIROBI, KENYA
Ph : 254-2-744943, 541054

PRAFULBHAI PATEL
P.B, No. 5101 KAMPALA,
UNGANDA
Ph : 256-41-236233

CHUNIBHAI PATEL
NDOLA, ZAMBIA
Ph : (R) 614515 (S) 613847

HEMENTBHAI R. PATEL
HERARE, ZIMBABWE
Ph : (R) 741827 (O) 750268

UPENDRABHAI D. DAVE
37, Russell Lane, Whetstone,
LONDON N 20 OBB, U. K.,
Ph : 208-361-3466 Fax : 208-361-1943

SURESHBHAI N. PATEL
1497, Willson Avenue,
Downsview, Ont.
CANADA, Ph : 416-247-8309

BABULAL P. BHANSALI
BANGALORE (KARNATAKA)
Ph. (R) 2256978, (O) 2202734

POKRAJJI OSTWAL
HUBLI-580028 (KARNATAKA)
House No.80 III Cross,
Adarsh Nagar
Ph : (R) 352591, 350294,
(O) 252007, 350608 Fax : 253386

VIJAYBHAI D. SHAH
CALCUTTA-700020
27, Chakrbria Lane(West Bengal)
Ph : 4750668

SANKARRAO P. DESMUKH
Opp, Mahavir Tcmple, Raman Rod (E)
ARRAH-802301 (Bihar)
Ph : (R) (06182) 25863 (O) 24219

NAVNEETBHAI V. MODI
INDORE (Madhaya Pradesh)
Ph : 286193, 537353
(O) 537351, 537355

मुक्ति - सुख

(हिन्दी)

कविराज नवनीत संघवी

जय सच्चिदानंद संघ

"दादा भगवानना असीम जय जयकार हो"

संसार विध्ननिवारक
दादाभगवान त्रिमंत्र

नमो अरिहंताणं (१)
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवई मंगलं ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (२)

ॐ नमः शिवाय ॥ (३)

जय सच्चिदानंद

(सुबह-शाम कम से कम पाँच बार इस मंत्र का स्फुट पठन या जाप अपेक्षित है ।)

नोंध : "त्रिमंत्र" की दादा भगवान द्वारा ओलोकित समज के लिए देखिये पृष्ठ नं. 43

CONTACT ADDRESSES

SHRI APTAPUTRA TRUST
'Samyamdham'
Nagarbaug Complex,
Via : Kadod, Ta : Bardoli,
Dist : Surat **SINGOD**-394 335
Ph : (02622) 46513

G. A. SHAH
Nr. Vibhuti Soceity,
Gokulnathji Chowk,
Mira Cinema Road,
AHMEDABAD-380 028
Phone : 5326922

APTAMANDIR
E-1, Hill Park, Opp. Abad Dairy,
Kankariya,**AHMEDABAD**-380 022
Ph : 5453230,6747076,
6761262, 6751336

Dr. SHAILESH P. MEHTA
22-A Vishrantipark,
Jain Derasar Line,
Nizampura, **VADODARA**-390 002.
Ph (R) 784348, 783173
(O) 337630, 352544

MAHAVIDEH TIRTHDHAM
Nr. Kamrej Crossing, On N.H. No. 8,
Po. **NAVAGAM**-394185
Dist : Surat
Ph : (02621) 52112, 52729, 52730

KANTILAL K. JAIN
13, Laxminarayan Lane,
Liladhar Ratanshi Bldg,
5th Floor, Mantunga,
MUMBAI-400 019
Ph : (R) 4022284, 4025263
(O) 2420480 Fax : 2422616

LALITBHAI C. MEHTA
Plot No. 182, Pollo No.2, Pavta
JODHPUR - 342 006 (Rajasthan)
Ph : (R) (0291) 546807, 544303
(S) 620932, 614092 Fax : 626309

ARVINDBHAI B. PATEL
65, Gujarat Vihar, Vikas Marg,
NEW DELHI-110 092
Ph : (R) 2240430

BHUPATBHAI KAMDAR
3-6-523, Sweta Apt,
Falt No. 104 1st Floor
Himayatnagar
HYDERABAD-500029
Ph : (R) 7632018
(S) 7632807,7638148

DILIPBHAI C. PATEL
MADURAI (Tamilnadu)
Ph : (0452) 680639, 680647
(O) 660581, 660582, 660851
E-Mail : torinodc @ eth.net

SOHANLAL K. JAIN
R. K. Synthetic Textiles,
71/41, Godown, Street 2na Floor
CHENNAI (Tamilnadu)
Ph : (044) (R) 5382098, (S) 5362875

HARISHBHAI V. PATEL
A-61,Shrenik Society,
Nr.Akota Stadium-**VADODARA**
Ph : (R) 342648 (o) 351170

OMPRAKASH SINGHAL
Kothi No.322,sector-15,
Panchkula-134109
HARYANA
Ph : (0172) 578300

RAMESHBHAI D. VASANI
105, Vardhaman Flats, Meghani Road,
SURENDRANAGAR-363 001
Ph : (02752) (R) 34956
(O) 50963, 50571

THAKORBHAI L. LORIYA
"Khodiyar Krupa"
73,Guj. Hou. Board
MORBI-363342 (Saurasthra)
Ph : (R) 40015

१९६२ में आपके भतीजे स्व. म. श्री चन्द्रकान्तभाई के निमित्त यह ''ज्ञान'' जगसन्मुख हुआ । वे आपको दादा कहते, दूसरे लोग गुरु ।

लेकिन वासुदेव उपनामसे प्यारे स्व. श्री नटुभाई पटेलने सूचित किया, ''यहाँ गुरु-बुरु नहीं, हम सब इन्हें ''दादा भगवान'' कहेंगे ! इस प्रकार अंदर प्रकट परम तत्त्वधारक आप ''दादा भगवान'' के नाम से महात्माओं के हृदयसिंहासन पर बिराजमान रहे हैं ।

आपके ज्ञानविधि से हजारों को शुद्धात्मापद प्राप्त हुआ है, जो निरंतर निराकुल निजानंद में रहते हैं । जीवन के अंतिम श्वास तक आपके श्रीमुख से बही ज्ञानगंगा से अनगिनत जीवन पावन, परिशुद्ध, प्रशांत बनते रहे ।

आपका देहविलय हुआ २०८८, पोष शुक्ल चौदस, दिनांक : २-१-११८८ के दिन । आपके हरदम मनोहर हसती मुखमुद्रा, वात्सल्यवर्षी चक्षु, चेतन स्पंदक बानी आज भी प्रेरणा-स्त्रोत हैं ।

अधुना अक्रम विज्ञान के परम ज्योतिर्धर परम पूज्य कनुदादाश्री अिस अनुपम अभूतपूर्व ज्ञानविधि से देश-विदेशके अनेक मुमुक्षुओंको शुध्धात्म स्व-पद प्रदान करते हैं । आप की वात्सल्यमयी नेत्र-सुधा, आपकी ज्ञान-सुरभित सरस्वती, आपकी शिवजी-स्वरुप प्रत्यक्षता, आपकी जगत्-विस्मृतिकर प्रभा से, जगत कल्याण के यज्ञमें निरंतर विराटरुप विहारमान रहते हैं । ऐसे अप्रतिम से स्व-प्रकाश पानेका अवसर कैसे चुके ? ऐसी मनीषा किसके हृदयमें न होगी ?

मुक्ति-सुख

(हिन्दी पदपूंज)

परम पूज्य कनुदादाश्री के आशिर्वचन

देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रोमें हमारे ज्ञान-सत्संग विहार के दौरान गुजराती न जाननेवाले मुमुक्षुओंकी माँग एवं मनीषा की पूर्ति करती मुक्ति-सुख के हिन्दी पदोंकी यह पुस्तिका हिन्दीभाषी जनता को अवश्यमेव उपकारक बनेगी ।

कविराज श्री नवनीत संघवी के अक्रम विज्ञान की समज को सहज, सरल एवं हृदयंगम बनाते हुए अिन सुरीले, सत्त्वसंपन्न पदों आपके शुध्धात्मा की वहीमें जमा-राशि बढाने में सहायक बने ऐसा हमारा आशिर्वाद ।

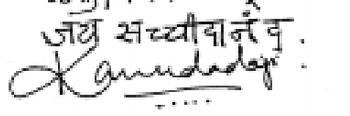

❖ अनुक्रम ❖

पद नं.	पदशीर्षक	पृष्ठ नं.
०१	किसीके काम जो आये	५
०२	'अनुभव' कहेता है हमको	६
०३	अपने हृदयके किवाड खोलो	७
०४	झूमक झूम गावो धून	८
०५	उठो, जागो, दोडो, पकडो	१०
०६	अपने दिलको साफ बनाकर	११
०७	जुगनु की जरुर नहीं	१२
०८	कोट टोपी वाले, दादाजी हमारे	१३
०९	दादा भगवान को नमस्कार करते हैं	१४
१०	गा, गा के 'दादा' - गीत	१५
११	दादा का सुदर्शन दुनिया को दीखा देंगे	१६
१२	स्वामी सीमंधर भगवान	१७
१३	चिट्ठी न कोई संदेश	१८
१४	विश्व की ये भव्यता तेरी है	१९
१५	कोइ अंग शरीर का काटे	२०
१६	मैं 'दादा' का वारस हूँ	२१
१७	दादा भगवान को साक्षी में रखते	२२
१८	जो दृश्यो का है 'दृष्टा'	२४
१९	हमरे जूलूसमें भारतमाता के दिलकी	२५
२०	व्यवहार है मंगलम्	२६
२१	जिसने राग-द्वेषकामादिक जिते	२७
२२	हे सांई बाबा, शांति विधाता	२९
२३	तेज तत्त्व का सामूहिक पिंड	३०
२५	गायो दादा भगवान	३१
२६	दादा तुम्हारे पावन पथ पर (पुष्पाजी)	३२
२७	मर्म मुबारक स्व-पर हित सु-स्वागत	३३
२८	जयतु, जयतु दादा भगवान	३४

मैट्रिक तक पढे, आगे नहीं, इस लिये कि आपकी खुद्दार, स्वतंत्रताप्रिय प्रकृति आगे पढकर बडे भाई की इच्छापूर्ति के लिये ''सूबा'' या इस तरह की बडी नौकरी करनेकी नहीं थी ।

और जब गाँव में आये हुए किसी संतने कहा, ''जा बेटा, भगवान तुझे मोक्ष ले जायेगा । तो आपने तत्काल कहा, ''नहीं चाहिये मुझे ऐसा मोक्ष । भगवान मुझे ले जाय, इसका अर्थ भगवान मेरा ऊपरी हुआ, ऐसा होता है । मोक्ष का मतलब ही मुक्तभाव, किसीका ऊपरी होना या किसीके हाथ नीचे होना आपके खूनमें ही नहीं था ।

व्यवसाय से कोन्ट्रैक्टर । बाईस-तेईस सालकी आयु से आपने बचपन के दोस्त श्री कान्तिभाई आपाभाई पटेल के साथ साझेदारी में व्यवसाय शुरु किया । लेकिन धंधे में पूरी नीति । आप कहते, ''सीमेन्ट लोहा सही ढंगसे इस्तेमाल किया जाय । सिमेन्ट मकानका लहू है और लोहा हड्डियाँ । भूखे मरेंगे, लेकिन बेईमानी नहीं करेंगे ।''

बचपन से धर्मप्रिय । वैष्णव, स्वामिनारायण, शैव सबमें फिरे, धर्मग्रंथों में गीता, श्रीमद् राजचंद्र के ग्रंथ आदि पढें । श्रीमद् राजचंद्र के आश्रममें जातें । सब तथ्यों के समन्वयरुप जीवनवर्तन, सब का भला करनेकी भावना (obliging nature), फिर भी ''मान'' की अपेक्षा, मान न मिलने पर चोट पहुँचती । किसीने अंबालालभाई के स्थान पर ''अंबालाल'' कहा तो चोट लगी । लोलुपता-लालच नहीं, परोपकारवृत्ति की पराकाष्ठा, ममतारहित फिर भी ''मान''की अपेक्षा भारी ।

इस प्रकार जीवन-यापन करते वडोदरा में मामाकी पोलमें आप रहते थे । व्यवसाय की वजह से आप वडोदरा से सौनगढ-व्यारा, बम्बई, सुरत ट्रेन से आते-जाते ।

सन् १९५८ । इस प्रकार के एक प्रवास के दौरान एक शाम आप ट्रेन की प्रतीक्षा में सुरत स्टेशन पर तीसरे प्लेटफार्म की एक बैन्च पर बैठे थे । वहाँ एक विरल घटना एकाएक घटी । सारे ब्रह्मांडका दर्शन आपके ज्ञानमें आलोकित हुआ । 'मैं' कौन हूँ ? यह जगत क्या है । किस प्रकार चलता है ? भगवान कौन ? क्या करता है ? मुक्ति क्या है ? ब्रह्मांड के ऐसे अनेक रहस्य ''ज्ञान'' में आलोकित हुए ! अहंकार अंतिम नमस्कार कर अदृश्य हो गया । तत्पश्चात् यह आत्मस्थिति निरंतर बनी रही । चार साल तक यह ज्ञान आपमें छिपा रहा ।